9

खेजड़ी

मुरधर माँहीं थनै नमै सब, ढाणी–मजरा–गाँव, खेजड़ी!
कियाँ बखाणूँ थारी माया, धन–धन थारी छाँव, खेजड़ी!!
खड़ी एकली थूँ मदमाती!
कैर, बोरड़ी थारा साथी।।
धोराँ में थूँ कींकर जीवै ?
कियाँ रेत में खावै–पीवै ?

कोसाँ ताँई नज़र न आवै, जळ रौ कोई ठाँव, खेजड़ी!
तो भी बारह मास हरी थूँ धन–धन थारी छाँव, खेजड़ी!!
नित रा ओळ्यूँ–दोळ्यूँ थारै।
काळा हिरण कुलाँचाँ मारै।।
मोर, कमेड़ी, कुरजाँ बोलै।
गोड़ावण रा जोड़ा डोलै।।

कदै डाळ पै कोयल कूकै, करै कागला काँव, खेजड़ी!
ऊँट पातड़ा खा अरड़ावै, धन–धन थारी छाँव,
स्याळौ और उनाळौ झेलै।
आँधी और डुगट सूँ खेलै।।
लू री लपटाँ लावा लेवै।
पण थूँ उफ! तक कोनी केवै।।
म्हाँ लोगाँ रा, जूता तक में, दाझण लागै पाँव, खेजड़ी!
पंथी रुक बिसराम करै है, धन–धन थारी छाँव, खेजड़ी!!

अर्थ

हे खेजड़ी! मरुधरा में यानी राजस्थान की रेतीली धरती के ढाणी, मजरे और गाँव के सभी लोग तुमको नमस्कार करते हैं। मैं तेरी महिमा की कैसे व्याख्या करूँ ? हे खेजड़ी! तू धन्य है, तेरी छाया धन्य है!

तू अकेली अपनी ही मस्ती में खड़ी है और कैर तथा बेर के पेड़ / झाड़ी तेरे साथी हैं, पर यह समझ नहीं आता कि तू रेतीले धोरों में कैसे जीवित रहती है तथा वहाँ रेत में क्या और कैसे खाती–पीती है?

हे खेजड़ी! रेत के धोरों में कोसों दूर तक कहीं भी पानी का कोई स्थान नहीं दिखाई देता है। (दो मील का एक कोस होता है।) इसके बावजूद भी तू वर्ष के बारहों महीनों में हरी रहती है। हे खेजड़ी! तू धन्य है, तेरी छाया धन्य है!

रोज़ाना तेरे आस–पास में काले हिरन कुलाँचें भरते हैं। मोर, कमेड़ी (एक चिड़िया–गुरगल) तथा कुरजाँ नाम के पक्षी बोलते हैं और गोड़ावण पक्षी के जोड़े घूमते हैं।

हे खेजड़ी! तेरी डाली पर कभी तो कोयल कुहुकती है और कभी कौए काँव–काँव करते हैं। ऊँट तेरे पत्ते खाकर अरड़ाते (आवाज़ करते) रहते हैं। हे खेजड़ी! तू धन्य है, तेरी छाँव धन्य है!

तुम सरदी और गरमी सहन करती हो, तो कभी धूल भरी हवाओं से और रेत के गुबार से खेलती हो। तेज़ी से चलती हुई लू की लपटें तुम्हारी बलैयाँ लेती हैं, लाड़ लड़ाती हैं, पर तुम इतनी सहनशील हो कि इतनी गर्मी को झेलते हुए भी 'उफ' तक नहीं करती हो।

हे खेजड़ी! लू तथा गरमी से जूते में हमारे पाँव जलने लगते हैं। तुम्हारी छाया में राहगीर कुछ देर ठहरकर आराम करते हैं। हे खेजड़ी! तू धन्य है, तेरी छाया धन्य है!

खेजड़ी को 1983 में राजस्थान का राज्य वृक्ष घोषित किया गया था। इसे थार (रेगिस्तान) का कल्पवृक्ष, जांटी, शमी भी कहा जाता है। वैसे तो यह सारे राजस्थान में पाया जाता है, लेकिन राजस्थान के पश्चिमी इलाकों में अधिक पाया जाता है।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

माँही – में, अंदर
थनै – तुम्हें
नमै – नमन करते हैं
ताँई – तक
ठाँव – स्थान, जगह
कुलाँचाँ – कूदना, उछलना, फुदकना
अरड़ावै – आवाज करे
दाझण – जलना

उच्चारण के लिए

दाझण, अरड़ावै, पातड़ा, जीवै, ढाणी, मुरधर, बखाणूँ, ठाँव

सोचें और बताएँ

1. खेजड़ी के बारे में अच्छी बातें कौन–कौनसी हैं ?
2. खेजड़ी कौन–कौनसे मौसम सहन करती है ?
3. खेजड़ी के पत्ते किस–किस काम आते हैं ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें।

(क) धन–धन शब्द आए हैं –

(अ) कैर के लिए (ब) बोरड़ी के लिए
(स) खेजड़ी की छाँव के लिए (द) नीम के लिए ( )

(ख) खेजड़ी की डाल पर बैठकर कूकती है –

(अ) कौआ (ब) कोयल
(स) ऊँट (द) कुरजाँ ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(अ) नितरा .....थारै।

(ब) आँधी और.....सूँ खेलै।

(स) पंथी रुक.....करै है।

3. खेजड़ी के साथी कौन–कौनसे पेड़ है ?

4. खेजड़ी से क्या लाभ है, लिखिए।

5. खड़ी एकली थूँ मदमाती ।
कैर, बोरड़ी थारा साथी ।।
धोराँ में यूँ कींकर जीवै ?
कियाँ रेत में खावै–पीवै ?
उक्त पंक्तियों का अर्थ लिखिए।

भाषा की बात

- खेजड़ी के पास हरिण कुँलाचें भरता है। ''खेजड़ी'' और ''हरिण'' संज्ञा शब्द है। पाठ में आए ऐसे ही संज्ञा शब्दों को छाँट कर लिखें।

वाक्य	संज्ञा

- पाठ में अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) एवं ण वाले शब्द आए हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखें।

अनुस्वार (ं)	अनुनासिक (ँ)	ण वाले शब्द
पंथी	छाँव	बखाण

यह भी करें

- खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है। अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से राजस्थान राज्य के राज्य फूल, राज्य पक्षी, राज्य पशु के बारे में जानकारी कर लिखें

जो परोपकार में प्रवृत्त रहता है, उसी का जीवन सफल माना जाता है।
—ब्रह्म पुराण

एक साथ तीन काम

तीन यात्री किसी शहर में से जा रहे थे। तभी एक सिक्का दिखाई दिया।
अहा, सिक्का!
हम सबने इसे एक साथ देखा इसलिए यह हम सबका है।
हाँ, हाँ क्यों न हम कुछ खरीदकर आपस में बाँट लें।
ठीक है! पर क्या खरीदें?
मेरा तो मन मीठी चीज़ खाने का कर रहा है।
ठीक है! पर कई मीठी चीज़ें खरीदेंगे।
पर मुझे तो प्यास बुझाने के लिए कुछ चाहिए।

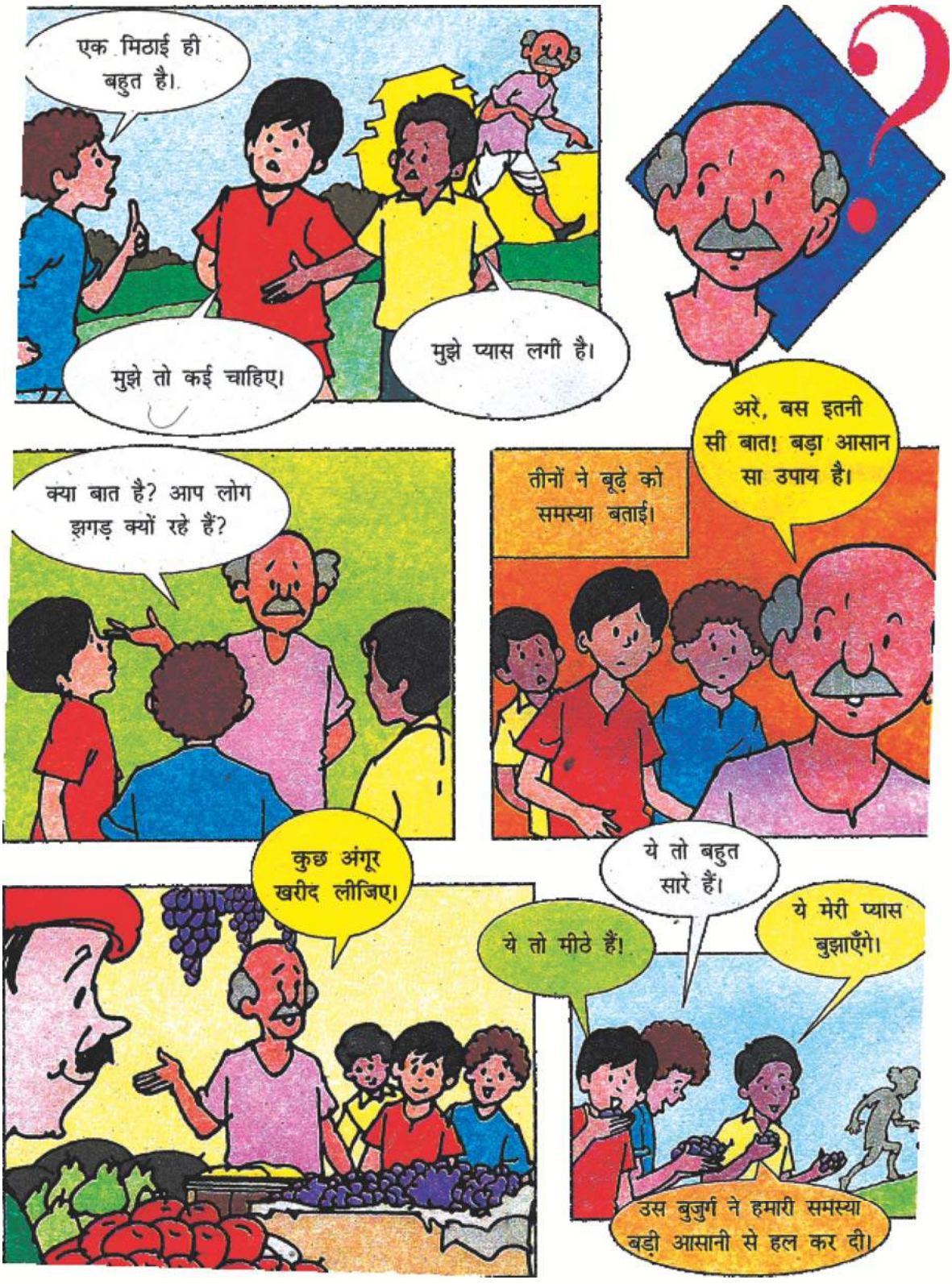
एक मिठाई ही बहुत है।
मुझे तो कई चाहिए।
मुझे प्यास लगी है।
?
क्या बात है? आप लोग झगड़ क्यों रहे हैं?
तीनों ने बूढ़े को समस्या बताई।
अरे, बस इतनी सी बात! बड़ा आसान सा उपाय है।
कुछ अंगूर खरीद लीजिए।
ये तो बहुत सारे हैं।
ये तो मीठे हैं!
ये मेरी प्यास बुझाएँगे।
उस बुजुर्ग ने हमारी समस्या बड़ी आसानी से हल कर दी।